JABALPUR PUBLIC COLLEGE
49, KARMETA, PATAN ROAD, JABALPUR
NATIONAL WORKSHOP ON
PREPERATION OF AN IDEAL LESSON PLAN
DATE – 12/03/2016 & 13/03/2016

जबलपुर पब्लिक कॉलेज करमेता में द्वि–दिवसीय आदर्श पाठ योजना निर्माण पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम दिनांक 12 मार्च तथा 13 मार्च 2016 को महाविद्यालय सभाकक्ष में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 12 मार्च प्रातः 11:00 बजे मध्यप्रदेश C.T.E. के अध्यक्ष डॉ. गार्गीशरण मिश्र (मराल) जी द्वारा अलग–अलग विषय विशेषज्ञ अतिथियों की उपस्थिति में माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर, बी.एड. विद्यार्थियों द्वारा सरस्वती वंदना के साथ आरम्भ किया गया।

कार्यक्रम के आरंभ में महाविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. निवेदिता द्वारा कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की गई जिसमें उन्होंने कहा कि कार्यशाला द्वि–दिवसीय होगी जिसमें दो चरण होंगे। कार्यशाला में विषयवार तीन समूह बनाए जाएंगे। प्रत्येक समूह से आदर्श पाठ योजना प्राप्त कर उन पाठ योजनाओं को एकत्रित रूप में एक पुस्तक का रूप दिया जाएगा तथा उसे ISBN NO. के लिए के लिए प्रस्तावित किया जाएगा।

महाविद्यालय में अलग–अलग महाविद्यालयों से पधारे विषय विशेषज्ञों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। सर्वप्रथम डॉ. दामोदर जैन, जो कि भोपाल से आए थे हिन्दी व सामाजिक विज्ञान के विशेषज्ञ हैं इन्होंने एक अच्छी पाठ योजना के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त कर पाने योग्य बना पाए। पाठ योजना बनाने के लिए शिक्षकों को कुछ प्रयास करने चाहिए जिसमें किसे पढ़ाना है? क्या पढ़ाना है? क्यों पढ़ाना है? और कैसे पढ़ाना है? को ध्यान में रखते हुए पाठ योजना बनाए। शिक्षक को कक्षा से लौटकर मंथन करना चाहिए कि –

- क्या बच्चों को सिखाने में शिक्षक को आनन्द आया?
- क्या शिक्षक ने छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित किया?
- क्या बच्चों को स्वयं सीखने का अवसर प्रदान किया?

अच्छी पाठ योजना के लिए बच्चे कैसे सीखते है? तथा सीखने में सम्प्रेषण कौशल की उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त किए।

नोबल शिक्षण महाविद्यालय (सागर) की प्राचार्या डॉ. पूर्वा जैन ने भाषा पर आदर्श पाठ योजना पर विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि एक अच्छे शिक्षक के पास एक अच्छी पाठ योजना बनाने का गुण होना चाहिए। उन्होंने एक अच्छी पाठ योजना तथा दैनिक पाठ योजना बनाने की बात अपने उद्‌बोधन में की।

डॉ. पूर्वा जैन के पश्चात् डॉ. पी.के. सिंग जो कि शिक्षा महाविद्यालय आगरा में प्राचार्य पद पर है। पाठ योजना की कमियों तथा उन्हें सुधारने के प्रयासों पर बल देते हुए पाठ योजना में

वैज्ञानिक विधि को सम्मिलित करने पर जोर दिया। इसके पश्चात् श्रीमान् भूपेन्द्र निगम ने सभागार को सम्बोधित करते हुए शिक्षक की भूमिका अभिभावक के रूप में बताते हुए शिक्षकों के स्वंय के विषय ज्ञान की अच्छी जानकारी रहने की बात कही। उनका मानना है कि पिछली पाठ योजना को आधार बनाते हुए यह देखा जाना चाहिए कि पिछली पाठ योजना के कितने उद्देश्यों की प्राप्ति हुई किन उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हुई तथा उन्हें कैसे प्राप्त किया जाए?

इसके पश्चात् विज्ञान की विशेषज्ञ डॉ. आशा रिछारिया ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि पाठ योजना विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए रीढ़ की तरह है जो बच्चों को प्रेरित करें। पाठ योजना प्रभावी होना चाहिए। प्रस्तुति पर बल दे। विषय का ज्ञान आवश्यक है। उन्होंने कहा कि वही पाठ योजना सही है जिसे कक्षा में पढ़ाने पर एक बच्चे के साथ सारे बच्चे ध्यान दें।

इसी क्रम में राजेश साहू जो कि डाईट पचमढ़ी में कार्यरत है ने शिक्षकों को सलाह देते हुए कहा कि जो भी पढ़ाया जाये वह विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन से जुड़ा होना चाहिए। प्रो. जी. जूडा ने प्रश्न पत्र की रूपरेखा पर अपने विचार दिए।

महाविद्यालय कि गरिमा को बढ़ाने के लिए हमारे अतिथि रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. कपिल देव मिश्र, अध्यक्ष श्री गार्गीशरण मिश्र तथा विशिष्ट अतिथि कमलेश अग्रवाल जी ने अपनी उपस्थिति देकर हमें गौरवान्वित किया। मुख्य अतिथि के आगमन पर महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. कपिल देव मिश्र जी का स्वागत महाविद्यालय के संचालक श्रीमान् प्रवीण वर्मा जी ने तुलसी का पौधा तथा प्रतीक चिन्ह देकर किया। स्वागत की इसी श्रृखंला में अध्यक्ष श्री गार्गी शरण मिश्र जी का स्वागत् श्रीमति संगीता कौल विशिष्ट अतिथि कमलेश अग्रवाल जी का स्वागत् मीनाक्षी श्रीवास्तव द्वारा महाविद्यालय के संचालक श्रीमान् प्रवीण वर्मा जी का स्वागत डॉ. रश्मि सिंह, प्रो. निवेदिता पॉल का स्वागत् श्रीमति प्रीति साहू तथा महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. श्वेता पाण्डे का स्वागत् डॉ. अरूणा विश्वकर्मा द्वारा किया गया।

अतिथियों के स्वागत् के पश्चात् अन्य महाविद्यालयों से आए विषय विशेषज्ञों को मुख्य अतिथि डॉ. कपिल देव मिश्र जी द्वारा प्रतीक चिन्ह तथा तुलसी पौधे प्रदान किए गए। स्वागत् कार्यक्रम के पश्चात् महाविद्यालय की प्रो. डॉ. निवेदिता पॉल ने महाविद्यालय के विकास क्रम की जानकारी दी। उसे और अधिक ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए हमेशा तत्पर एवं अग्रसर रहने की बात की। इसके पश्चात् विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. कपिल देव मिश्र जी ने सभागार को संबोधित करते हुए शिक्षक की भूमिका को समाज के लिए महत्वपूर्ण बताया है क्योंकि हम जो आज करते हैं वो कल हमें अवश्य वापस मिलेगा। अतः छात्रों में राष्ट्र देवों भवः की भावना डालने की आवश्यकता है। उन्होंने सभागार में उपस्थित सभी शिक्षकों को चाणक्य की तरह शिक्षा प्रदान करने को कहा। उन्होंने शिक्षक के हर शब्द का महत्व बताते हुए शिक्षकों के स्वाध्याय करने पर बल दिया।

मुख्य अतिथि के उद्बोधन के पश्चात् डॉ. रश्मि सिंह द्वारा डॉ. कपिल देव मिश्र जी को आभार प्रदान किया गया। आभार के पश्चात् सभा को स्वल्पाहार के लिए आमंत्रित कर सभा पर विराम लगाया गया।

दिनांक 13/03/2016 रविवार को कार्यशाला का अगला चरण शुरू किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत गार्गीशरण मिश्र (मराल) जी द्वारा सरस्वती माँ की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर सरस्वती वंदना के साथ किया। सरस्वती वंदना के पश्चात् महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा स्वागत् गीत की प्रस्तुति दी गई। स्वागत् गीत के पश्चात् प्राचार्य, कॉलेज ऑफ नागपुर डॉ. जे गोहा का स्वागत् तुलसी पौधा तथा प्रतीक चिन्ह देकर महाविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. निवेदिता पॉल द्वारा किया गया। डॉ. पी.एल. मिश्रा जी का स्वागत् तुलसी का पौधा तथा प्रतीक चिन्ह प्रदान कर किया गया। इसी क्रम में राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, जबलपुर में कार्यरत् डॉ. सुषम्मा जॉनसन का स्वागत् डॉ. श्वेता पाण्डे द्वारा तुलसी पौधा तथा प्रतीक चिन्ह प्रदान कर किया गया।

स्वागत् की श्रृखंला के पश्चात् डॉ. यू गोहा ने सभागार को सम्बोधित कर आदर्श पाठ योजना पर अपने विचार दिए उन्होंने न्यूटन के सिद्धातों की बात की। उन्होंने अच्छी पाठ्य योजना के लिए शिक्षक का बहुमुखी प्रतिभाशाली होना आवश्यक माना। बच्चों को पढ़ाने की बात की। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के भी सजग रहने की बात की। शिक्षक में ऐसे गुण होना चाहिए कि वह पाठ योजना को अपने विषय से जोड़ सके। पाठ योजना में कौशलों के अधिक से अधिक उपयोग पर बल दिया। श्रीमति गोहा ने कहा कि शिक्षक के हाथों एक विशेषज्ञ का निर्माण होना चाहिए।

डॉ. गोहा के उद्बोधन के पश्चात् डॉ. सुशम्मा जॉनसन द्वारा OER अर्थात् Open Education Resource के बारे में जानकारी प्रदान की। Teaching Video दिखाया गया जिसमें Interactive class पर बल दिया गया।

इसके पश्चात् पी.एल. मिश्रा जी ने पाठ योजना पर अपने विचार देते हुए कहा कि एक अच्छी पाठ योजना शिक्षक के व्यक्तित्व का आइना है। जिसमें मूल्यों की शिक्षा का समावेश होना महत्वपूर्ण बताते हुए अपने उद्बोधन को विराम दिया। अतिथियों के उद्बोधन के पश्चात् समूह विचार विमर्श के लिए सभी विषय समूहों से अपने विषय की पाठ योजना पर विचार विमर्श करने के लिए कहा गया। जिसके पश्चात् सभी को स्वल्पाहार में आमंत्रित किया गया।

कार्यशाला का दूसरा चरण स्वल्पाहार के पश्चात् पुनः प्रारम्भ किया गया। द्वितीय चरण में भाषा समूह, विज्ञान समूह तथा सामाजिक विज्ञान समूह से एक–एक समूह प्रतिनिधि द्वारा उस विषय पर पाठ योजना प्रस्तुत की गई सभी विषयों के विशेषज्ञों द्वारा पाठ योजना की रूप रेखा प्राप्त कर विशेषज्ञों की कमिटी में प्रस्तुत कर आदर्श पाठ योजना की रूप रेखा तैयार कराने का प्रस्ताव रखा गया। कार्यक्रम का मूल्यांकन जी.एस. मिश्रा जी द्वारा किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. श्वेता पाण्डे द्वारा सभा को धन्यवाद दिया गया। कार्यक्रम का मंचन श्रीमति अंजुलता यादव तथा हर्षिता सिंग द्वारा किया गया। महाविद्यालय की प्रोफेसर निवेदिता पॉल ने कार्यशाला में सहयोगी सभी शिक्षकगण – डॉ. श्रीमती श्वेता पाण्डे, श्रीमती श्यामली भट्टाचार्य, श्रीमती मीनाक्षी श्रीवास्तव, श्रीमती संगीता कौल, श्रीमति नियति पाण्डे, श्रीमती प्रीति साहू, डॉ. अरूणा विश्वकर्मा, श्री विनोद पात्रो एवं श्री विपिन पाण्डे, कु. दीक्षा लोधी एवं अन्य कार्यकताओं को धन्यवाद दिया। राष्ट्रगान जन–गण–मन के साथ कार्यशाला का समापन किया गया।